बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ०प्र०)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 147 /2025) Year: 8th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 06.02.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ फ्रांसबीन, पालक, मूली, मेथी, गाजर, शलजम, चुकंदर, लहसुन, सब्जी मटर, बैगन, टमाटर, मिर्च, गोभी वर्गीय फसलों तथा आलू में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों में नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। ➢ फसलों को संभावी मह्रू के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ ग्रीष्म कालीन टमाटर, बैगन एवं मिर्च के लिए पौधशाला तैयार कर लें। ➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु चौलाई, भिंडी, लोबिया, कुल्फा तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई प्रारंभ करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** ➢ फ़रवरी माह में ठण्ड का असर काम होने लगता है, ऐसे में तापमान में धीरे धीरे वृद्धि होने लगती है, जिसका अच्छा एवं बुरा असर फसलों में देखने को मिलता है। जहाँ एक ओर यह मौसम फसलों के समुचित विकास के लिए अच्छा होता है वहीँ दूसरी ओर फसलों में रोग लगने की संभावनाएं बढ़ती हैं। ऐसे में फसलों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ➢ गेहूं की फसल में उर्वरकों की अंतिम मात्रा का प्रयोग अवश्य ही कर लेना चाहिए। पिछले दिनों हुए बरसात का लाभ लेते हुए युरिया के साथ जिंक एवं सल्फर का प्रयोग करें । ➢ बीज के लिए उगाये जाने वाले फसलों में उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग करें । **मृदा.प्रबंधन** ➢ रबी की तिलहनी, अनाज एवं दलहनी खडी फसलों में पोषक तत्वो की कमी के लक्षण दिखाई पडने पर जल घुलनषील उर्वरकों जैसे एनपीके (19:19:19), एनपीके (0:52:34) एवं एनपीके 0:0:60 आदि में किसी एक की आवष्यकतानुसार मात्रा 100 ग्राम प्रति पम्प की दर से (15 लीटर पानी) छिडकाव करना चाहिए।

		➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों/अन्य कृषि विषेषज्ञों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन0 पी0 के0 मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ सर्दी के मौसम में पशुओं के पोषण की व्यवस्था ठीक रखनी पड़ती हे। पशुओं को सही भोजन नहीं मिलने से उनमे बीमारियों से लड़ने की क्षमता क्षीण हो जाती है, जिससे पशु जल्दी व बारबार बीमार हो जाते हैं। सर्दियों में पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए कम से कम 25 प्रतिशत हरा चारा व 75 प्रतिशत बढ़िया सूखा चारा खिलाना चाहिए। ➢ पशु को सप्ताह में दो बार गुड़ अवश्य खिलाएं। बिनौला, दाना, खली, खनिज मिश्रण व सैंधा नमक भी पशु राशन में अवश्य सम्मिलित करें जिससे पशुओं की सर्दियों में बीमारी से लड़ने की क्षमता बनी रहे साथ ही उनकी उत्पादकता भी प्रभावित न हो।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में माँहू के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0. 15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे परभक्षी कीटों व मित्र कीटों का संरक्षण किया जा सके। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100

		मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	फरवरी माह में तापमान बढ़ने और आर्द्रता में उतार–चढ़ाव के कारण जो रोगकारक के लिए अनुकूल हो जाता है और फसलों में रोगों का खतरा बढ़ जाता है। • **गेहूं .**पत्ती झुलसा (स्मंिठसपहीज) पत्तियों पर भूरे या काले धब्बे दिखाई देना इस रोग का संकेत है। इसके नियंत्रण के लिए, 0.1: कार्बेन्डाजिम या 0.25: मैनकोजेब का छिड़काव करें। पीला रतुआ (ल्मससवू त्नेज) पत्तियों पर पीली धारियां बनती हैं, जिससे फसल कमजोर हो जाती है। रोग के लक्षण दिखने पर 0.1: टेबुकोनाजोल या 0.25: प्रोपिकोनाजोल का छिड़काव करें। • **सरसों** सफेद रतुआ ;ैपजम त्नेज) पत्तियों और तनों पर सफेद धब्बे दिखाई देना इस रोग का लक्षण है। इसके नियंत्रण के लिए, 0.25: मैनकोजेब का छिड़काव करें। • आल्टरनेरिया झुलसा पत्तियों पर छोटे भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। फूल और फलियों पर भी काले धब्बे बनने लगते हैं। इसके नियंत्रण के लिए, 0.25: मैन्कोजेब या क्लोरोथालोनिलका छिड़काव करें। • पाउडरी मिल्ड्यू पत्तियों, तनों और बालियों पर सफेद चूर्ण जैसा फफूंद दिखाई देता है। संक्रमित भाग पीले पड़ जाते हैं और फसल की वृद्धि प्रभावित होती है। इसके नियंत्रण के लिए सल्फर 2 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें। या टेबुकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी में छिड़काव करें। संक्रमण अधिक होने पर 10–15 दिन के अंतराल पर दोहराएँ। तना गलन तनों का काला होना और गलना इस रोग का संकेत है। इसके नियंत्रण के लिए, खेत में जल निकासी सुनिश्चित करें और 0.1: कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करें। **चना** स्टेम रॉट तनों पर भूरे या काले धब्बे बनते हैं। इसके नियंत्रण के लिए 0. 25: मैन्कोजेब का छिड़काव करें।

		सामान्य सुझावः • फसलों की नियमित निगरानी करें और रोग के प्रारंभिक लक्षणों पर तुरंत कार्रवाई करें। • फसल अवशेषों को नष्ट करें या गहरी जुताई करें ताकि रोग के कारक नष्ट हो सकें। • संतुलित उर्वरक का उपयोग करें और अधिक नाइट्रोजन का प्रयोग न करें, क्योंकि यह रोगों को बढ़ावा दे सकता है। • फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल को लगातार न उगाएं। समय पर सही प्रबंधन अपनाकर किसान अपनी फसलों को रोगमुक्त रख सकते हैं और उत्पादन बढ़ा सकते हैं।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	फरवरी माह के दौरान उद्यान फसलों में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख समसामयिक कृषि कार्यो का विवरण निम्नवत है – **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2,4–डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें। छिडकाव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करना चाहिए। ➢ आम मे चुर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति 1 लिटर के हिसाब से घुलनशील गंधक का छिडकाव करें । आम में यदि पुष्प कुरूपता दिखाई दे रही है तो गुच्छों को तुरंत काटकर नष्ट कर दें। ➢ श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) इस रोग की उग्रता की स्थिति में पत्तों एवं बढ़ते फलों पर इंडोफिल एम–45 नामक फफूंदनाशी (0.2:) का 2–3 छिड़काव करना चाहिए । रोग ग्रसित टहनियों तथा इसके प्रभाव से झड़े पत्तों को जलाना या गाड़ देना लाभकारी होता है । ➢ फफूंद जनित पिंक रोग के कारण पूर्ण विकसित पेड़ों की टहनियां एक दृ एक करके सूखने लगती है । इसके नियंत्रण के लिए सूखी टहनियों को 15 से.मी. नीचे से छांट कर उसके कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए तथा इसमें फफूंदनाशी का 2–3 छिड़काव करना चाहिए । **पपीता में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पपीता में तना गलन रोग के कारण भूमि की सतह से तना सडना शुरू हो जाता है पौधा गिर जाता है। इस रोग से बचाव के लिए पानी का निकास ठीक करें तथा कॅप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। **शरीफा (सीताफल) में मुख्य** कृषि कार्य ➢ शरीफा जिसे सीताफल भी कहा जाता है। सीताफल में स्केल कीट टहनियां व फूलों का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाता है। ➢ इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलाएं। पेड़ पर डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें। **नींब में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियां, पत्तियां व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं। ➢ इसके नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइकिलन 100 मिलीग्राम व ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें।

		➢ नींबू के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें। ➢ किन्नो,संतरा व नींबू आदि फल वृक्षों में फूल एवं फल लगना प्रारंभ हो जाता है। इन पौधों के थालों की गुड़ाई कर खाद–उर्वरक डालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पष्चात पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ चंदन के बीज जो नवंबर और दिसंबर के महीने में बोए गए थे, अंकुरित हो रहे हैं। 2–4 पत्ती अवस्था प्राप्त कर चुके पौधों को निकालकर पॉलीथीन बैग्स में प्राथमिक होस्ट के रूप में अरहर, मूंग, अरहर जैसे प्राथमिक होस्ट के साथ रोपित किया जाना चाहिए, ताकि नर्सरी में उनका और विकास हो सके। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार